# यान्त्रिक प्रभाव से मिटती मानवता की रक्षा की भव्य भावना से रंजित गिरिजा कुमार माथुर का विज्ञान काव्य

डॉ अलका गुप्ता

,शहीद सुखदेव कालेज आफ बिजनेस स्टडीज,

दिल्ली विश्वविद्यालय, अतिथि संकाय

सार ; वैज्ञानिक यंत्रों की अंध दौड़ से ग्रसित अखिल विश्व आज समूल विनाश के कगार पर पहुंच गया है , तार सप्तक के आधार स्तम्भ कवियों में गणित और नयी कविता के शीर्ष कवि गिरिजा कुमार माथुर को अपने जीवन काल में इस खतरे का आभास हो चुका था इसलिए उन्होंने अपनी काव्य रचनाओं में इस गहन समस्या को रेखांकित किया जिस पर यह आलेख आवृत है

कुंजी शब्द

यांत्रिक, अभियांत्रिकी, उच्चाटन, मारण, तकनीकी महाकोष, विभीषिका इत्यादि।

हिन्दी साहित्य के काव्य सृजनात्मक क्षेत्र में विज्ञान को आधार बनाकर गिरिजा कुमार माथुर ने नये आयाम स्थापित किये हैं। काव्य के सांचे में नवीन वैज्ञानिक तकनीक को ढालकर नई कविता को एक नवीन दिशा में अग्रसर कर दिया। आज के वैज्ञानिक आविष्कारों, जो ब्रह्मांड की सीमा में दाखिल हो चुके हैं ,से प्रभावित माथुर जी ने विज्ञान की नीरस, शुष्क गूढ़ाभिव्यक्ति को अपने काव्य में सरस रूप में प्रस्तुत करते हुए लिखा" – आज की दुनिया में विज्ञान और टैक्नोलोजी का प्रभाव है वह' न्यूयार्क में फॉल 'कविता से आरंभ होता है × × × × इन कविताओं में सबसे अधिक टैक्नोलोजी युगीन सभ्यता को काव्य की प्रेरणा माना है।xxxx वैज्ञानिकता का सूत्रपात हिन्दी कविता में' न्यूयॉर्क में फॉल 'कविता से आरंभ होता है".1. माथुर के काव्य की बनावट और बुनावट, मधु माहेश्रवरी, प्र० सं०1988 , पृ० 105 । इस कविता में कवि ने विदेशी वातावरण का मनोरम चित्र खींचा है-

"थम गई बरसात नभ, आ गया है नॉयलान सा पारझीना, यह खुला मौसम मनोरम फॉल का मौसम ,हिमानी रात, ठण्डी धूप का मौसम ,समुद्री हवा पर उड़ता हुआ ,पत्तों भरा ऑटम".

2.धूप के धान, गिरिजा कुमार माथुर , न्यूयार्क में फॉल , दि०सं०,1958 , पृ०84।

समाज कोई भी हो, बिना ज्ञान परंपरा के अपना अस्तित्व कायम नही रख सकता। ज्ञान की परंपरा ही उस समाज, देश, जाति को विज्ञान से जोड़ती है। यह विज्ञान अपने वैविध्य के बावजूद समाज या देश की जातीय चेतना और उसके आत्म अस्तित्व को गति देता है, जीवन्तता प्रदान करता है अत :उसके उत्थान-पत्तन, गति-अवगति का रेखाकंन युग परिवेश .के साथ जीवन सापेक्ष अधिक होता है। आधुनिक विज्ञान और खगोलशास्त्रियों ने मानव की इस गति अवगति को समाज की गति माना और पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, तारे, निहारिकाएं, आकाश-गंगाएं और देवयान के रहस्य से मनुष्य का परिज्ञान कराया । इनके पारंपरिक संबंधों का सूक्ष्मता से निरीक्षण-परीक्षण कर यह सिद्ध किया कि विज्ञान मनुष्य की सहज आस्थाओं के विरुद्ध यथार्थ की खोज है। भारतीय विज्ञान ने वेदों का महत्व मानवीय जीवन के महास्रोत और महाकोश के रूप में किया है। इसलिए भारतीय मनीषा साहित्य के साथ विज्ञान – बोध को ज्ञान वृद्धि में सहायक मानती है ।विज्ञानवाद से जुड़कर भारतीय साहित्यकारों ने अपनी रचनाशीलता को नई चेतना प्रदान की। उन्होंने वैज्ञानिकों की तरह कथ्य-कथन न करते हुए विशिष्ट चित्त वृतियों और रागात्मक अवस्थाओं की अपने भाषा-प्रयोग द्वारा सुग्राह्य अभिव्यंजना की है"

.2गिरिजा कुमार , काव्यदृष्टि और अभिव्यंजना -डा० राहुल, प्र० सं०, पृ० 98 ।

माथुर जी की सर्जनात्मक अन्वेषणात्मक दृष्टि ने नित नये तथ्यों और सत्यों को खोजकर विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक योगदान किये ।' कल्पान्तर 'और' पृथ्वीकल्प 'जैसै महत् विज्ञान काव्य लिखकर विज्ञान के उत्कर्ष और विनाश लीलाओं के प्रति विश्व मानव को सहज बोध कराया। डा० नगेंद्र ने इस संबंध में लिखा -माथुर जी की यह नवीन साहित्यिक दृष्टि केवल अध्ययन से ही नहीं वरन रुचि –संस्कार से अधिक प्राप्त थी। काव्य वस्तु के अंतर्गत उन्होंने नवीन विचारों का चयन कर आधुनिक जीवन की कलात्मक संभावनाओं का बड़े संयम के साथ उपयोग किया। विज्ञान के नये अविष्कार और उनकी संभावनाएं इस कवि की काव्य चेतना में ढलने लगीं। अणुयुग के वैज्ञानिक चमत्कारों को अंतरिक्ष विजय की नहीं वरन् ,संभावनाओं और उनके प्रकाश में मानवता के भविष्य की कल्पनाओं को साकार करने के लिए कवि ने' पृथ्वीकल्प' के रुप में अत्यंत साहसिक प्रयास किया है। हमारी धारणा है कि विज्ञान के नवीन उपकरणों को काव्य सामग्री के रूप में प्रयुक्त करने का यह अपने ढंग का पहला प्रयास है,.3आज के लोकप्रिय कवि :गिरिजाकुमार माथुर, संपादक नगेन्द्र, प्र० सं०, भूमिका ।

कवि अपनी वैज्ञानिक प्रवृति को काव्य मे ढ़ालकर सृष्टि के रहस्यों पर से पर्दा हटाना चाहता है परन्तु वर्तमान यथार्थ से मुंह मोड़ कर नहीं। वैज्ञानिक दृष्टि नवीन मूल्यों और नवीन मानवीय परिवेश को गहराई से जानने की , समझने की शक्ति प्रदान करता है। इसके बिना समाज , राजनीति ,धर्म ,अर्थ और व्यवस्था में सामंजस्य स्थापित कर पाना संभव नहीं होगा । जो बीत गया वह अतीत है और अतीत से ही आज का पता जुड़ा हुआ है। माथुर जी स्वयं से इस सत्य का उद्घाटन करते हुए लिखते हैं "– "विज्ञान के नये मूल्य अपने मानवीय परिवेश को और गहराई से पहचाने की दृष्टि देते हैं जिससे प्रकृति, समाज, व्यवस्था तथा अंतरंग भावना के बीच नया अर्थ पूर्ण सामंजस्य स्थापित कर सके। लौकिक सत्य को पहचानने के लिए मनुष्य ने अपनी सभ्यता का प्रारंभिक बिन्दु निर्धारित करके अतीत, वर्तमान और भविष्य क' त्रिकाल 'में विभाजित किया है। जो बीत चुका ,

वह हमारा अतीत है जिसके साथ वर्तमान में हम अपना संवाद स्थापित करते है.4 "मुझे और अभी कहना है - गिरिजा कुमार माथुर, भूमिका।

सकारात्मक और सत्यान्वेषी माथुर जी ने विज्ञान के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को संवेदनाओं के रूप में संसार के समक्ष रखा है। वैज्ञानिक विभीषिकाओं के प्रति लोगों को सजग और जागरूक करने का प्रयत्न किया है।' कल्पान्तर 'की भूमिका में माथुर जी ने लिखा," आधुनिक युग की वैज्ञानिक प्रगति के परिप्रेक्ष्य में पद्धतियों के विचारात्मक संघर्ष पर आधारित प्रतीक काव्य' कल्पान्तर 'में युद्ध और शांति की विश्व समस्या को मानवीय संदर्भ में प्रस्तुत करने का लोकमांगलिक यत्न किया गया है। वैसे संकेत रूप में इस की कथा आदमी के इतिहास की परिवर्तन गाथा ही है परन्तु यहाँ विश्व समाज की वर्तमान स्थिति और पृथ्वी के अस्तित्व को ही केंद्र में रखा गया है। इस दृष्टि से यह काव्य आज चारों और व्याप्त चरम भय ,आतंक ,हिंसा, हत्या ,क्रूरता, पशुता और युद्धोन्माद के विरुद्ध शांति के पक्ष में चारों ओर उठती आवाज में एक आवाज़ अपनी भी मिलाता है5".कल्पान्तर, गिरिजा कुमार माथुर , भूमिका , प्र.स.1983, पृष्ठ 5 ।वर्तमान वैज्ञानिक और तकनीकी विभूति का पूरा प्रयोग मानवीय मंगल अर्थात सामाजिक ,आर्थिक, सांस्कृतिक मुक्ति के लिए नहीं हो रहा शक्ति संपन्न देशों द्वारा अपना प्रभुत्व बनाए रखने की प्रतिस्पर्द्धा ने सामूहिक विनाश का चरम संकट उपस्थित कर दिया है। धन, वैभव ,व्यावसायिक लिप्सा ,अंधाधुध औद्योगिक प्रसारवाद, प्राकृतिक संपदा का विवेकहीन दोहन ,संहार के नए अस्त्रों ,रसायनों और औषधियों का अन्वेषण और उत्पादन, जीव कोषों को कृत्रिम रीति से बदलने के खतरनाक प्रयोग, हिंसक कामवासना, अघोरचार और भोगवाद' स्वर्ण देश 'है। सार्वभौम नियंत्रण ,सैनिक तानाशाही ,आतंक ,भय, क्रूरता ,संप्रदाय पर आधारित एकाधिपत्य कट्टर प्रतिगामी संप्रदायवाद, संकीर्ण हत्यारे, धर्मवाद ,रंग , वर्ण, भेद ,नस्ल आदि अत्यंत अनुदार कर्मकांडी निषेधात्मक प्रगतिशील क्षेत्रों में रहने वाली जनता को" लौह देश "माना है परिवर्तन कामी क्षेत्रों में रहने वाली बृहत्तर जनता जिन के ऊपर हर प्रकार के प्रयोग किये जाते रहे हैं तथा हिंसा, क्रूर नियंत्रण ,एकाधिपत्य, ,सैन्यवाद ,युद्ध और मृत्यु के साधनों में भयंकर प्रतिस्पर्धा, घृणा, संदेह, रक्तपात ,मुक्ति संघर्षों के दमन और स्वतंत्रता हनन के परम विरोधी पर जनहित की आइडियोलोजी से कहीं अधिक संकीर्ण राष्ट्रहित को महत्व देने वाले उन्नत देशों के प्रबुद्ध जन हैं। युद्ध और शक्ति प्रसार के लिये प्रयुक्त नवीनतम टैक्नोलोजी द्वारा रासायनिक उत्पादनों और उनसे निकले, खतरनाक कूड़े-कचरे से वन ,पर्वत ,सागर, नदियां वायुमंडल और अंतरिक्ष विषाक्त होते जा रहे हैं। यदि सैन्यवादी दबावों के कारण अणु युद्ध छिड़ गया तो पृथ्वी का जीवनक्रम ही समाप्त हो जायेगा। , माथुर जी ने इसे रोकने के उपायवश संसार के करोड़ों लोगों को शांति के पक्ष में हर जगह अपनी संगठित आवाज उठाने और इतना जबरदस्त जनमत बनाने का आह्वाहन किया है जिससे संहार की यह दौड़ और मृत्यु की उपासना हमेशा के लिये अंतप्रायः हो जायें। आदमी को शीघ्र ही यह ऐतिहासिक निर्णय लेना होगा। यह कोई आदर्शवादी कल्पना नहीं वरन् संसार के पिछले इतिहास को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आगामी दुनिया का क्या रूप होगा।" यदि उन्नीसवीं सदी मनुष्य की स्वतंत्रता और बीसवीं सदी मानवीय समता की शक्तियों की रही हैं तो मुझे लगता, है कि इक्कीसवीं सदी मानवीय' अस्मिता 'यानी आदमी की सही और परिपूर्ण पहचान

पर केंद्रित होगी।' शान्ति देश 'इसी का प्रतीक है।6".कल्पानतर, गिरिजा कुमार माथुर, प्र.स.1985, पृष्ठ5 । माथुर जी की पैनी दृष्टि ने जब विश्व में घृणा, घोर आतंकवाद,रक्तपात की ओर गंभीरता से देखा तो पाया कि इसके मूल में" स्वर्ण दैत्य "विज्ञ शैतान की क्रूरता काम करती है जिसकी भर्त्सना करते हुए उन्होंने लिखा है -

" यह मानव की संस्कृतियां आदमखोर शिशु हैं, "साधन ही बदले, न बदली प्रवृतियां छीनने, हड़पने की रक्त प्यास, लोलुपता, आक्रमण बलात्कार ,अस्थि – अस्त्र से लेकर ,अणुओं के चीत्कार ,कही षड्यंत्र, कहीं घुसपैठ, मारकाट, हत्या, आतंक,दमन ,सामूहिक रक्तपात, देह मन, विचारों की दास प्रथाएं खूनी , अंधश्रद्धाए नहीं, मनुज समाज व्याप्त ,अब भी यह दुनिया है बलवालो की दुनिया है , विवेकशून्य बल की, अन्धशक्ति अभी ठोकर मारती है न्याय को"

6.कल्पान्तर, गिरिजा कुमार माथुर, प्र० सं० , 1985पृष्ठ, 24।

विज्ञान का उपयोग मानव के सामाजिक , आर्थिक, मानसिक स्वास्थ्य , चिकित्सीय विकास से मानव का मंगल करना ही प्रमुख उद्देश्य रहना चाहिए था ,परंतु ऐसा न कर शक्तिसंपन्न राष्ट्रों की अपना प्रभुत्व बनाए रखने की प्रतिस्पर्धा की प्रवृति ने संपूर्ण मानव सभ्यता को मौत के चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है । कवि यांत्रिक चेतना के प्रति सजग हो कर सोचने के लिए विवश करना चाहता है। संपूर्ण विश्व कल्याण की संवेदनाओं को काव्य के साँचे में ढालकर जनता तक पहुंचाना ही इस रचनाकार का ध्येय रहा है और काव्य के सांचे में अपनी संवेदनाएं ढाल कर जनता तक पहुंचाई हैं।विश्व परिदृश्य में घटित आतंक और विनाश के मूल में शासको के तुच्छ स्वार्थो की पूर्ति हेतु वैज्ञानिक उपकरणों का साधन रुप में अंधाधुंध प्रयोग ही है। ये पाशविक शासक स्वयं को सर्वशक्तिमान मानकर ज्ञान-विज्ञान और समस्त प्राकृतिक साधनों को अपने अधीन कर जनसामान्य के भाग्य – विधाता बन बैठे हैं। ऐसे दुराचारियों द्वारा अपने निरंकुश अनुशासन को कल्याणकारी सिद्ध करने की नित नई परिभाषाएँ गढ़ी जा रही है। कवि का मानना है कि यह सब भौतिक सभ्यता के प्रसार का कमाल है। जिसके कारण कुछ ही लोगों के हाथ धरती का भविष्य सिमट कर रह गया है-

"और आज जब ये अंधशक्ति घृणा, हिंसा, संदेह पर, दमन और भय पर ,आधारित समाज तंत्र एक छत्र ,तानाशाह राज्यों की पद्धतियां,----------

कुटिल मतादर्शो के घोर हथियार लिए, ,सैन्य शक्ति, गुप्त पुलिस, भेड हांक अनुशासन, बंद किये अपने निरंकुश गोदामों से जीने के सब साधन.7 "कल्पातर, गिरिजा कुमार माथुर, संपादक गाथा, पृ०29

।भारतीय प्राचीन विकास परंपराओ और आधुनिक वैज्ञानिक विकास और उसकी शक्ति की नई चिता से सरोकारित कवि का मानना है कि विज्ञान मानव कल्याण के पक्ष में सार्थक भूमिका निभा सकता है बशर्ते कि हम उसका सदुपयोग करना सीखें, वरना विज्ञान धरती से जीवन क्रम भी मिटा सकता है ----"दे चुका ज्ञान विज्ञान तुम्हें चेतावनियां हो रहीं रसायन सृष्टि क्रुद्ध , है गरम वायुमंडल होता , पृथ्वी का वातावरण – आवरण विषमय होता जाता है बदल रहीं ऋतुएं सारी , जल, धूल, धातु, पाषाण, द्रव्य , सागर हिम,मेघ, वनस्पतियां, सब जीवकोष भू अंतर तक रेडियो रश्मियों से सक्रिय होते जाते, यदि

मनमानी रूकी नहीं तो पृथ्वी तापग्रस्त होगी ,मिट जायेगा जीवन का क्रम इस धरती से8 ". कल्पान्तर, गिरिजा कुमार माथुर ,पराविघुद्ता,प्र.स.1983, पृष्ठ. 63।

आज मानव की आवश्यकताएं दिनोंदिन बढ़ती जा रही हैं उनकी पूर्ति हेतु, कल कारखानों की बाढ़ सी आ रही है।जंगल सिमटते चले जा रहे हैं जिससे वन्य जीवो का अस्तित्व भी संकट में पड़ गया है। परमाणु एवं अंतरिक्ष संबंधी नए परीक्षणों से धरती के रक्षा-कवच ओजोनमंडल को भी लगातार क्षति पहुंच रहीं हैं। कारखानों से निकलने वाला रसायन युक्त कचरा एवं मानव मल के निस्तारण के कारण नदियों का जल भी दूषित हो गया है। पर्यावरण असंतुलन से मौसम चक्र भी बदलने लगा है। असमय ही ऐसिड की वर्षा होना आम बात हो गई है प्राकृतिक आपदाओ के मंडराते खतरे से माथुर जी भली-भांति सचेत थे -घिरता है रेडियो राख का घन अंधियारा ,पर्वत ,मैदान, गांव, घर द्वार कांपते ,उखड़ रहीं हैं एक साथ मीलों की फसलें,जंगल झूम झूम कर उखडे , उठते भारी हुए उपटकर ,मिट्टी के लोथड़े उड़ रहे ---------- एसिड की बूंदे बरसातें ,ऋतुएँ सारी एक साथ मिल हुईं भयानक, क्षितिज रेख पर ,धातु,स्लेट प्रस्तर के नाग-छत्र उठते हैं ,काले नभ में ,अणु अग्नि के पिंड फटते है

.9कल्पान्तर , गिरिजा कुमार माथुर ,शांतिदेश, पृष्ठ96

वर्तमान में परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र नये-नये प्रकार के मारक हथियार विकसित करने में लगे हैं इनकी देखा-देखी विकासशील देश एवं परमाणुशक्ति विहीन देश भी परमाणु प्रविधि प्राप्त करना चाहते हैं । इसके लिए एक दूसरे के गुप्त परमाणु कार्यक्रमों की जानकारी पाने की खतरनाक प्रतिस्पर्द्धा चल रही है । शक्ति संपन्न मारक आणविक हथियारो को विकसित करके अपना वर्चस्व कायम करने के लिए और मारक आणविक हथियारों को विकसित करने के लिए अपने बजट का बहुत बड़ा हिस्सा खर्च करते हैं जिसकी देखा-देखी अविकसित देश भी जनकल्याण से मुंह मोड़कर आणविक शक्ति पाने के लिए बहुत सा धन व्यय कर रहे हैं। वैज्ञानिक भी इस प्रकार की संहारक तकनीकों को इजाद कर गौरवान्वित हो रहे हैं। असंवेदनशील सरकारे भी इन संहारक शस्त्रों के रचयिताओ को पुरुस्कारों से लाद देती है। इन मारक हथियारों का प्रयोग दूसरे देशों की शांति भंग कर वर्चस्व स्थापित करतीं और आतंकवाद का यह नग्न तांडव करतीं यह छद्दम नीतियां इन पक्तियों में बड़ी सूक्ष्मता से उजागर हो रही हैं -

"हम प्रसन्न है अणुपति तुमसे, शीघ्र तुम्हें, हम पूरब का सुप्रीम कमाण्डर नियत करेंगें, पृथ्वी की रेडियम खानों में फिर कुछ नये शेयर भी देगे .इससे पहिले तुम्हें नया गंभीर काम भी दें ,पहिनो ये सर्वोच्च फौज का तमगा,नयी धातु चंद्रमा का----- ,ओ यंत्र दैत्य,,तुमने उन छुपे भूमि सात संस्थानों में, जो किए अनोखे अन्वेषण, सामूहिक हत्या के खोजे ,भूतो न भविष्यति जो साधन,उनकी रिपोर्ट पेश करो।10 ". पृथ्वी कल्प , गिरिजा कुमार माथुर, शांति देश, पृष्ठ97 -98 । तानाशाही शासक अपने राजनीतिक स्वार्थ सिद्धि के लिए पृथ्वी का भविष्य बर्वाद करने पर तुले हैं

देख रही हूँ मैं कबंध विकलांग अजन्मी संतानों के पातो पर पांतो में गिरते ,अणु उत्तप्त धरा के मरू पर, काले सूखे सिंधु खोखले गरम राख से भाप भरे द्रव्य,जल में ताजी बुझी धातु सी, गंध उठ रही जिनसे अविरत ,क्या धरती की परिक्रमा, फिर लौट जायेगी अपने अथ पर, अंधकारमय जंतु युगों पर ,राजनीति के हाथों बंदी, यह अंधा विज्ञान, हमें क्या ले जाएगा फिर लौटाकर, आदिम फंगस कातारों तक, डिनोसोर तक सरीसृपों तक,11. गिरिजा कुमार माथुर का काव्यानुशीलन , डा. शारदा राउत, पृष्ठ126 । वैज्ञानिक युग परिवेश की जितनी विकासात्मक दशाएं हो सकती हैं, माथुर जी के काव्य में विस्फोटक ध्वनियों के साथ व्यंजित हैं।" स्वर्णदेश "और' लौहदेश "की विकसित तकनीक की लोमहर्षक नृशंसता, ,बर्बरता, घृणित घिनौनी क्रूर-कूट चालों, साजिशों, अंतरराष्ट्रीय आतंकी षड्यंत्रों, संत्रासो, त्रासदियों और उनके बीच पिसते मामूली आदमी की विवशता का अद्भुत वर्णन हुआ है। "वैज्ञानिक आस्था की नूतन प्रवृत्ति का सूत्रपात भी मैंने अपने भविष्य काव्य' पृथ्वी -कल्प 'के साथ किया है। जिस का आधार' कॉस्मिक चेतना 'है और जो भारतीय और सांस्कृतिक दृष्टि के साथ आधुनिक वैज्ञानिकता के सम्बद्ध होने का उदाहरण भी है12". गिरिजा कुमार माथुर का काव्यानुशीलन ,डा 0शारदा राउत, पृष्ठ127

''पृथ्वीकल्प' 'में आधुनिक वैज्ञानिक पराकाष्ठा के प्रति उनकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होती चली गई है। आधुनिकता को मैं वैज्ञानिक प्रक्रिया से उद्भूत दृष्टि मूल्य मानता हूं," .13पृथ्वीकल्प , गिरिजा कुमार माथुर, भूमिका । इस कृति में वैज्ञानिक शब्दावली के रूप में यंत्र ,अणु राडार ,बैलून, रोबोटो , इलैक्ट्रान, कम्प्यूटर, डिक्टोफोन रेडियो, रिमोट- कंट्रोल ,इन्फ्रारेड कैमरा, टेपरिकार्डिंग मशीनें ,रसायन, बीटा, गामा, एक्स रे, रेडियम, कास्मिक टेलिविजन ,चलचित्र, ध्वन्याकंन ,नेट,, स्पेस-यान, इंपल्स ऑपरेशन, केबल, तार, ब्लूप्रिट, डायल, माइक्रोबम, करंट आदि को लिया है। खगोलिय शब्द जैसे -ग्रह , नक्षत्र, निहारिकाए, भू- गंगाएं ,तारे, सूर्य ,चांद, ग्रहण ,पोल, भूमध्य रेख, उपग्रह आदि भी प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त हुए है। समसामयिक आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित ---- "बेत सोफे, कालीन, दीवान,चटाई, शेड्स, फिश बोल, एक्वेरियम की पत्तीदार रोशनी, मैगजीन, पुस्तकें,कैक्टाई एब्सेट्क्ट आर्ट,धातु के अनहोने पक्षी, बौने दैत्य पेड ,जापानी साल्वे डर डाली, ब्लैक काफी के साथ, धातु के अनहोने पक्षी13 .जो बंध नहीं सका, गिरिजा कुमार माथुर , पत्तीदार रोशनी का दंभ ,प्र.स. 1967, पृष्ठ 29 ।कवि की कालदृष्टि में आधुनिक मानव सभ्यता की वैज्ञानिक प्रगति करोड़ों युगो से अनगिनत संघर्षो का ही परिणाम है - "अरबों मन्वंतरो के सामने, दस हजार सभ्यता के वर्ष, ये धड़कता हुआ सिर्फ एक क्षण है ,सिमटकर आ गये है इस छोटे से दियले में , ये तमाम युग , बीती शताब्दियां, खड़े हैं एक साथ , डिनोसोर और न्यूयॉर्क ,सन्नाते भुजंगी सौ गज दैत्य पक्षी ,मोटी चन्चु ग्रीवा ताने,जम्बो जैटों की तरह ,उड़न व्हैलो के साथ-साथ , तीर की तरह तैरते निकल जाते, चपटे कैटर पिलर नाग,और ध्वनि अधर में उठकर , तैरती रेखा सी मैगनेटिक ट्रेनें ".14 .पृथ्वीकल्प , गिरिजाकुमार माथुर,काल दृष्टि, पृष्ठ79

।आधुनिक नैनों टैक्नोलोजी और वैज्ञानिक, अविष्कारों ने हजारों किलोमीटर का सफर चंद घंटो का कर दिया है। चंद्रमा और मंगल पर पहुंच आसान है। ऊंची-ऊंची कई मंजिला भव्य अट्टालिकाएँ वैज्ञानिक उपकरणों के योग से कुछ ही महीनों के परिश्रम से आसानी से बनाई जा रही हैं। कमरे का तापमान अपनी सुविधा से रखा जा सकता है खेतों में वर्षा पर निर्भरता कम हो गई है सब कुछ विज्ञान चालित है। भौतिकता की इस अन्ध दौड़ में लिप्त व्यक्ति

आत्यंतिक सुख-साधनों का संग्रह करने में तत्पर है वो जीवन की स्वाभाविकता से कोसों दूर खड़ा है। संवेदनाएं शून्य ,मानवीय संबंध धूल गर्द से सराबोर, बेमानी जीवन-मूल्य, दिल -दिमाग लौह इस्पात निर्मित, घड़ी की सुइयों में बंधा जीवन, दिखावटी और कृत्रिम सभ्यता का सर्वप्रभाव, मध्यवर्ग बनावट और दिखावे में तल्लीन ---" लौहे के दिल दिमाग ,हाथ इस्पात के ,निराविध समय को जो अंकों में बांधते, ×××××× चलते हैं तार खिचे मध्य वर्ग के पुतले ,रोल्ड गोल्ड का कल्चर, चमकते मुलम्मे से15 ".शिलापन्ख चमकीले, गिरिजा कुमार माथुर,नया नगर प्र.स.1961, पृष्ठ71-72 । माथुर जी वैज्ञानिक आविष्कारों को प्रकृति पर मानव की विजय का सुंदर प्रतीक मानते थे। पृथ्वी कल्प पृथ्वी पर जीवन के जन्म और उसकी सार्थकता से संबंधित परिकल्पना का उद्भव है।इस अंतरिक्ष युगीन काव्य में मानवीय जीवन के अर्थ को सृष्टि की विराट निरन्तरीयता के संदर्भ में देखने की पूरी कोशिश है। इसमें वर्तमान की कटु वास्तविकता और भविष्यखंड में संसार के साधारण जनों ,परिवर्तित मूल्यों और आगामी मानव समाज का संकेत चित्र भी प्रस्तुत किया गया है ---

धरती की सुंदरतम सृष्टि इंसान हैं, संशय,भय,घृणा, युद्ध, लिप्सा, शैतान है,

सामूहिक मृत्यु ,त्रास, कुण्ठा, दमन, अवसाद,

दुनिया पर मत वादों के जघन्य अनाचार,मिथ्या आदर्शों के प्रेतों विकृतियों पर, शवसाधक पन्थो , पद्धतियों पर ,जडवादी पंजों में जकड़ी संस्कृतियों पर, जीत इंसान की पृथ्वी की गाथा इतिहास की कहानी है16.. तारसप्तक ,गिरिजा कुमार माथुर, इतिहास, छठा स०1995 , पृष्ठ, 18।आज की इलेक्ट्रॉन सभ्यता ने मनुष्य को जीवन की भरपूर सुख – सुविधाएं तो दी पर पारिवारिक व्यवस्था भौतिक सभ्यता की भेंट चढती जा रही है, मां-बाप की सेवा अनाथाश्रम के भरोसे छोड़ दी जाती है। पति-पत्नी दोनों कमाऊ होने से बच्चों में अकेलापन, हीनता ,कुंठा और अपराध बोध की भावना घर करती जा रही है। बीसवी सदी इंसानियत के विकास की दृष्टि से अंधकार की सदी है। भोगवादी सभ्यता इंसानी रिश्तों की खूबसूरती का काल बन गई है। मानवीय सरोकारों की पापमयी प्रवृत्तियों से परिपूर्ण यह दुनिया बच्चों के मन से माता-पिता के लिए सम्मान से रहित हो गई है ,बार – बार उनके बाप बदलते हैं मां बदलती है, माँ-बाप के बीच कई बार तलाक होते हैं ,बच्चे जन्म लेते ही अपने आप को मारपीट, झगड़े के वातावरण में पलते पाते हैं। ऐसे बच्चे आगे चलकर दुःख उठाने के साथ समाज को कलंकित करते हैं -

भागती हुई सामने अण्ट -शण्ट बर्राती ,ऐश- इशरत से भौंचक ,चकाचौथ अंधलोक की पोल में भहराई ,घन्नाती इलेक्ट्रान सभ्यता-------

वर्षों से,

माफिया, मुनाफा, शराब धृत रूलेट स्विंग, कैबरे, कैसीनो, भोग मर्डर के बीच पोशीदा पापों से भयभीत, खूबसूरत संबंधों से कटी हुई दुनिया,×××× जिन्होंने जन्मते ही देखे, आधी नींद में चौंककर अपने जनको के बीच शोर, धक्का, फजीहत, मुक्केबाजी, झड़प, झगड़ा, सूजी आंख, दांत कटी बांह, कटी शर्ट, स्कर्ट टॉप , बार-बार

बदलते बाप ,बार-बार घर में आती एक औरत धमकाती, एक और नयी मां।16 ".भीतरी नदी की यात्रा, गिरिजा कुमार माथुर, बीसवां अंधकार,प्र.स.1975, पृष्ठ63 -64 यांत्रिक प्रगति ने घर का अर्थ बदल दिया है। पहले आदमी अपनी सुविधा के लिए घर बनाता था जिसमें उसका परिवार रहता था,उस घर से उसकी यादें और संवेदनाएं जुड़ीं हुईं होती थी। पर वर्तमान जीवन की" फ्लैट संस्कृति "में लोहे और सीसे मात्र से निर्मित मकान ही दिखाई देते है। अब घर नहीं बिल्डिंग्स बनाई जाती है हैं। परिवार के नाम पर पत्नी और एक दो बच्चे जो कभी-कभार ही उस मकान में साथ में बैठते हैं इसलिए कवि ऐसे मकान में रहना कब्र में रहने के समान मानता है, यही यांत्रिक सभ्यता की दुःखद त्रासदी और घोर यंत्रणा है।" मैने रहने के लिए मंजिलों मजिल ऊंचे भवन बनाये थे वह मुझ पर ही बैठ गये, लोहे शीशे की समाधि से,अब मैं बिल्डिंग बनाता हूँ और कब्र में लेट जाता हूं17". भीतरी नदी की यात्रा, गिरिजा कुमार माथुर, यंत्र त्रास पृष्ठ 48 । आज की वणिक संस्कृति जो दिनोंदिन उत्थान की ओर अग्रसर हो रही है,वह मनुष्यों को अब विभिन्न कष्ट दे रही है।पर अब इस संस्कृति की मृत्यु ,विनाश अत्याधिक समीप है। मानव की मशीन के छोटे से पुरजे स्क्रू जैसी स्थिति है उपयोग के लिए उन्हें जहां-तहां ले जाया जा सकता है, उसका मूल्य भी स्क्रू से अधिक नहीं आंका जाता,

ये पहिया जो चलता है यंत्र धारा विराट का, वह भीतर का जहर बहुत बाहर फुनकारता आदमी हुआ बौना, मास स्क्रू इस परमता का बैठ गया है बाजार विभव, लोहे शीशे की समाधि सा, हर कर्म हर मकसद नयी व्यर्थता में डूब गया, अब अक्ल और पागलपन दोनों ही एक हैं18 . भीतरी नदी की यात्रा, माथुर, वणिक संस्कृति का मृत्यु गीत, प्र.स.1975, पृष्ठ 52 ।

आज के युग का मानव इतना शुष्क और संवेदन हीन हो गया है कि प्रेम जैसी अनुभूति भी उसके लिए बोरियत का रेचन मात्र है। भगवान की मूर्ति से कोई धार्मिक आस्था जुड़ाव नहीं, तस्कर व्यापार का एक साधन मात्र , साहित्य, विज्ञापन, सिनेमा, संगीत सभी प्रदर्शन से अधिक कुछ नहीं-

"प्यार बोरियत का रेचन, सादा पानी तत्काल, तुम्हारी पसंद प्रेत, थ्रिलर, चमत्कार, मारधाड़ ,आर्ट कामुक विज्ञापन, ड्राइंग रूम की आराइश, मूर्ति तस्कर व्यापार, साहित्य सेक्स का बाजार , संगीत शो कानफाड़ 19.भीतरी नदी की यात्रा, गिरिजा कुमार माथुर, बीसवां अंधकार प्र.स.1975, पृष्ठ66

मशीनीकरण ने मनुष्य के प्राकृतिक जीवन को इंसानी रोबोट में तब्दील कर दिया है इन्हीं सब के चलते माथुर जी ने नयी कविता में वैज्ञानिक उपकरणों को काव्य सामग्री के रुप में प्रस्तुत कर अछूते क्षेत्रों का उद्घाटन किया है पर साथ ही/ विज्ञान की बौद्धिकता और काव्य की भावात्मकता में ऐक्य स्थापित करने का भरपूर यत्न किया है मानवविकास की संभावनाओं को वैज्ञानिक प्रगति के परिप्रेक्ष्य में देखने की आशा व्यक्त की है । डॉ नामवर सिंह के शब्दों में,यह माथुर साहब के गले का मंगल सूत्र है', गहरे रेखांकनीय यह है कि पृथ्वी कल्प में विज्ञान विकास, मानव और पृथ्वी के जन्म -निरमाण के परस्पर संबंधों की कथात्मक सर्जना है। । इस रहस्य को जानने-समझने की सार्थक चेष्टा के साथ दार्शनिक प्रश्न भी बार -बार मन में कौंध पैदा करते हैं। जन्म ,पुनर्जन्म, भूत-भविष्य,

वर्तमान के परस्पर अक्स कंट्रास्ट की अनुभूति करते चलते है"20.गिरिजा कुमार माथुर, काव्य दृष्टि और अभिव्यंजना, डा.राहुल,1996, पृष्ठ 108

कवि माथुर जी ने वैज्ञानिक चेतना के आधार पर मौलिक काव्य रचनाएँ की हैं। विज्ञान रस हीन विषय है पर माथुर जी के काव्य का अध्ययन करते हुए कहीं ऐसा नहीं प्रतीत नहीं होता। उनका विज्ञान काव्य सहजता और ,मनुष्य जीवन के अनेक विचारों से भरा पड़ा है। उनकी यह वैज्ञानिक काव्य रचनाएँ वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए उपयोगी हैं। ऐसी रचनाओं से प्रेरणा लेकर हमारे वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं को विज्ञान का उपयोग मानव कल्याण के लिए ही करना चाहिए । यांत्रिक और वैज्ञानिक सम्यता के विकास के साथ-साथ मानवीय मूल्यों की भी रक्षा की जानी चाहिए। | मौलिकता एवं अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता की दृष्टि से कवि का विज्ञान काव्य नवीन वैज्ञानिक और मानवीय चेतना का सूत्रपात करने वाला ही सिद्ध होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.माथुर के काव्य की बनावट और बुनावट - डा. मधु माहेश्वरी,प्र.सं०1988

2.गिरिजा कुमार माथुर का काव्यानुशीलन- डॉ . शारदा राउत, विद्धा प्रकाशन,2008

3. गिरिजा कुमार माथुर : काव्य दृष्टि और अभिव्यंजना - डॉ राहुल, प्र.सं०, प्रभात प्रकाशन।

4.गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में सौंदर्य बोध - शोध प्रबंध - हरिराम आलडिया, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर2015

5.धूप के धान- गिरिजा कुमार माथुर , भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली,1966

6.कल्पातंर -गिरिजा कुमार माथुर, प्र०सं०, नेशनल पब्लिशिंग हाउस1983

7.पृथ्वीकल्प- गिरिजा कुमार माथुर, किताब घर, नई दिल्ली,1994

8.,मुझे और अभी कहना है - गिरिजा कुमार माथुर, राधा कृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली,1991

9. जो बंध नहीं सका - गिरिजा कुमार माथुर , भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,1968

10.शिलापंख चमकीले - गिरिजा कुमार माथुर , साहित्य भवन प्रा० लि० , इलाहाबाद, 1961

11.भीतरी नदी की यात्रा - गिरिजा कुमार माथुर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस ,1975

12.तारसप्तक-अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दसवां सं०, 1995, नयी दिल्ली

13.आज के लोकप्रिय कवि: गिरिजा कुमार माथुर,सं० डॉ कैलाश वाजपेई, आत्मा राम एंड संस, 1963

☆☆☆